Nandikeshvara Stotram

नन्दिकेश्वरस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Nandikeshvara Stotram

File name : nandikeshvarastotram.itx

Category : shiva

Location : doc_shiva

Proofread by : PSA Easwaran

Translated by : Hindi: Agnishekhar, English: P. R. Kannan

Latest update : June 6, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 6, 2022

sanskritdocuments.org

Nandikeshvara Stotram

नन्दिकेश्वरस्तोत्रम्

भवेशं भवेशानमीड्यं सुरेशं
विभुं विश्वनाथं भवानीसमाद्यम् ।
शरच्चन्द्रगात्रं सुधापूर्णनेत्रं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ १ ॥

अर्थात् - देवादिदेव हे पार्वती-प्रिय नन्दिकेश! आप संसार मोक्षदाता स्तुत्यदवश विभु तथा दीन-दुखियों का दुःख दूर करते है। शरीर शरत्काल के चन्द्रमा के समान उज्ज्वल है और नेत्र अमृतधर्मा हैं । मैं आपका स्तवन करता हूं ।

I worship Nandikeswara, the lord of wellbeing, the lord of samsara, the adorable lord of Devas, the all-pervading, the lord of universe, who is kind and soft like Bhavani, whose form shines like the autumnal moon, with eyes full of nectarine sweetness, who removes the misery of the poor. (1)

हिमाद्रौ निवासं स्फुरच्चन्द्रचूडं
विभूतिं दधानं महानीलकण्ठम् ।
प्रभुं दिग्भुजं शूलटङ्कायुधाढ्यं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ २ ॥

अर्थात् - निर्धनों के दुखों का नाश करने वाले और कैलासवासी हे नन्दिकेश्वर ! आपके माथे पर हिमालय से निकलते चमकीले चांद का मुकुट है, कण्ठ नीला है, शरीर पर विभूति है । त्रिशूल और तलवार वाली आपकी भुजाएं लंबी हैं अर्थात् आप महाबाहु हैं । मैं आपका भजन करता हूं । मेरे दुःख दूर करो ।

I pray to Nandikeswara, who resides in Himalayas, who wears on his head the rising Moon, who is adorned with Vibhuti on his body, whose throat is blue, the lord, with long arms extending in directions, holding weapons of Trisula and sword, who is the remover of the misery of the poor. (2)

भवेशं गजेशं प्रपन्नार्तिनाशं

विभास्वत्समुद्यत्प्रभाकान्तिपूरम् ।
भवानीयुताधार्धाङ्गशोभाभिरामं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ३ ॥

अर्थात् - संसार के स्वामी तथा गजासुर के संहारक हे शरणागतवत्सल नन्दिकेश्वर! उदित होते सूर्य की प्रभा के समान आपकी कान्ति है । पार्वती के साथ बैठे आप और भी शोभायमान हैं और दीन-दुखियों के दुःख दूर करते हैं । मैं आपका भजन करता हूं । मेरा दुःख दारिद्र्य दूर करो ।

I worship Nandikeswara, the lord of Samsara, the destroyer of Gajasura, the remover of the misery of those who surrender, whose radiance is that of rising Sun, who is the beloved of the radiant Shiva - who shares half his form with Bhavani, who is the remover of the misery of the poor. (3)

मृगाङ्कायुतप्रक्षदीप्तिप्रकाशं
ज्वलद्वह्निकेशं शशाङ्कार्धभालम् ।
सदा भक्तचित्ते स्फुरन्मोदरूपं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ४ ॥

अर्थात् - हे प्रभु नन्दिकेश्वर! आप चन्द्रशेखर हैं । अपरिमित चंद्र प्रकाश के समान उज्ज्वल तथा चमकदार रुदाक्षमाला की कांति से प्रकाशमान हैं । दीन-दुखियों का दुख दूर करने वाले हे नंदिकेश, आप की जटाएं अग्नि के समान हैं । मैं आपका भजन करता हूं ।

I pray to Nandikeswara, who is radiant with the shine exuded by countless moons, whose hair shines like blazing fire, whose forehead is like half moon, whose cheerful form lights up the minds of devotees always, who is the remover of the misery of the poor. (4)

वराभीतिहस्तं कुठारेशपाणिं
जटाजूटगगाङ्गोल्लसद्वारिधारम् ।
विषाशं महोक्षाधिरूढ मदारि
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ५ ॥

अर्थात् - कामदेव के संहार कर्ता हे नन्दिकेश! आप अपने एक हाथ से भक्तों को वर और दूसरे से अभयदान एक साथ देते हैं । आपके हाथ में कुठार है, जटाजूट में गंगा की धारा चमकती है और नन्दि आपकी सवारी है । दोनों के नाथ और विषपायी हे प्रभो! मैं आपका भजन करता हूं ।

I worship Nandikeswara, whose hands show vara and abhaya mudras, another hand holds a large axe, whose matted tresses shine with swirling waters of Ganga, who consumed poison, who rides the great bull, who is the enemy of Kamadeva, who is the remover of the misery of the poor.(5)

जगत्या विभूषं मृगेन्द्राजिनधृत्
षडाम्नायमन्त्रप्रसिद्धार्थमूलम् ।
प्रसादादि मन्त्रस्फुरज्ज्ञानहेतुं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ६ ॥

अर्थात् - हे भगवान नन्दिकेश! आप कल्याणकारी आशतोश, आशुराश, दया ऐश्वर्यदाता दीनों के दख हरने वाले और सभी सिद्धियों के स्वामी है । आपका जटाएं पिंगल वर्ण की हैं । मैं आपका भजन करता हूं ।

I pray to Nandikeswara, for whom world is adornment, who wears tiger skin, who is at the root of the meaning of Shadamnaya mantra, who is the cause of the outburst of knowledge of mantras of Prasada etc., who is the remover of the misery of the poor. (6)

भवानीपदाम्भोजहृत्पद्मसंस्थं
सुरेन्द्रादि देवैः सदा सेव्यमानम् ।
नगेन्द्रात्मजाप्राणनाथं शरण्यं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ७ ॥

अर्थात् - दीनों के दुखों का हरण करने वाले हे शरणागत नन्दिकेश! पार्वती के चरण कमल आपके हृदय-कमल में विद्यमान रहते हैं । आप पार्वती के प्राणनाथ हैं और इन्द्रादि देव आपकी सदा सेवा करते हैं । मैं भी आप हूं और आपका भजन करता हूं । नि रहते हैं ।

I pray to Nandikeswara, who has in his heart-lotus the lotus feet of Bhavani, who is ever worshipped by Devendra and other Devas, who is the lord of the very life breath of Parvati (Shiva himself), who is the shelter for all beings, who is the remover of the misery of the poor. (7)

भवे नन्दीशानं सकलमनुसिच्यैककरणं
वसु-श्लोकैरेभिः प्रतिदिनमपि स्तौति नित्यम् ।
तदैवेश-प्रीत्या निखिलसुखभागीह जगति
परं मोक्षं चान्ते परमपदमाप्नोति सहसा ॥ ८ ॥

अर्थात् - इस संसार में जो व्यक्ति मंत्र सिद्धि के दाता भगवान नन्दिकेश की उक्त आठ श्लोकों से प्रतिदिन नियमपूर्वक स्तुति करता है वह भगवान की प्रसन्नता से तत्काल समस्त सुखों को पाकर अन्त में मोक्षरूपी परम पद को पाता है । (श्री चामुण्डा नन्दिकेश्वर का इतिहास एवं महात्म्य से उद्धृत) ।

One, who adores every day with these eight verses Nandikeshvara, who grants siddhi of all mantras in this world, attains all comforts in this world and at the end attains the supreme state of Moksha quickly. (8)

इति नन्दिकेश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

नन्दिकेश्वरस्तोत्रम्

भवेशं भवेशानमीड्यं सुरेशं
विभुं विश्वनाथं भवानीसमाद्यम् ।
शरच्चन्द्रगात्रं सुधापूर्णनेत्रं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ १ ॥

हिमाद्रौ निवासं स्फुरच्चन्द्रचूडं
विभूतिं दधानं महानीलकण्ठम् ।
प्रभुं दिग्भुजं शूलटङ्कायुधाढ्यं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ २ ॥

भवेशं गजेशं प्रपन्नार्तिनाशं
विभास्वत्समुद्यत्प्रभाकान्तिपूरम् ।
भवानीयुतार्धाङ्गशोभाभिरामं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ३ ॥

मृगाङ्कायुतप्रक्षदीप्तिप्रकाशं
ज्वलद्वह्निकेशं शशाङ्कार्धभालम् ।
सदा भक्तचित्ते स्फुरन्मोदरूपं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ४ ॥

वराभीतिहस्तं कुठारेशपाणिं
जटाजूटगगाङ्गोल्लसद्वारिधारम् ।
विषाशं महोक्षाधिरूढ मदारि

भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ५ ॥

जगत्या विभूषं मृगेन्द्राजिनधृत्
षडाम्नायमन्त्रप्रसिद्धार्थमूलम् ।
प्रसादादि मन्त्रस्फुरज्ज्ञानहेतुं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ६ ॥

भवानीपदाम्भोजहृत्पद्मसंस्थं
सुरेन्द्रादि देवैः सदा सेव्यमानम् ।
नगेन्द्रात्मजाप्राणनाथं शरण्यं
भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ७ ॥

भवे नन्दीशानं सकलमनुसिद्ध्यैककरणं
वसु-श्लोकैरेभिः प्रतिदिनमपि स्तौति नित्यम् ।
तदैवेश-प्रीत्या निखिलसुखभागीह जगति
परं मोक्षं चान्ते परमपदमाप्नोति सहसा ॥ ८ ॥

इति नन्दिकेश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Proofread by PSA Easwaran

English translation by P. R. Kannan

Nandikeshvara Stotram

pdf was typeset on June 6, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*